बैगन की फसल के प्रमुख रोग एवं कीट

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 14–19

बैगन की फसल के प्रमुख रोग एवं कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

डॉ0 दुर्गा प्रसाद[1] एवं डॉ0 आर0 पी0 सिंह[2]

[1]सह–प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान,
कृषि महाविद्यालय, बायतु, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

[2]वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण, बिहार, भारत।

Email Id: pspath870@gmail.com

सब्जियां कृषि और पोषण सुरक्षा की महत्वपूर्ण घटक हैं। गहन फसल प्रणाली में सब्जियों को अपनाने से अधिक आय अर्जित की जा सकती है। सब्जियों में प्रचुर मात्रा में विटामिन्स, प्रोटीन, कर्बोहाईड्रेट,एवं खनिज लवण पाया जाता है जो हमारे स्वास्थ्य तथा शरीर की आतंरिक प्रणाली को मजबूत करता है। सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं जिसमें प्रमुख समस्या रोगों एवं कीटों की है जिससे उत्पादकता सामान्यतः 25–30 प्रतिशत तक घट जाती है। रोगों एवं कीटों का प्रकोप अधिक होने पर नुकसान का प्रतिशत बढ़ जाता है साथ ही साथ सब्जियों की गुणवत्ता में कमी आती है ।यदि इस नुकसान को एक सीमा तक रोक दिया जाय तो हमारी सब्जियों की आवश्यकता को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। सब्जियों में बैगन एक अत्यन्त लोकप्रिय फसल है जिसमें कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण तथा एंटीआक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। रोगों एवं कीटों के प्रकोप से बैगन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। बैगन की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग एवं कीटों का प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

(क) बैगन की फसल के प्रमुख रोग एवं उनका समेकित प्रबंधन

1. आर्द्र पतन या पौध गलन रोगः पौधशाला में बुआई के बाद बीजों पर अनेक प्रकार के फफूँद का प्रकोप होता है, जिसके कारण बीज सड़ जाता है तथा जमाव प्रभावित होता है। अधिक प्रकोप की दशा में जमीन से निकले पौधे मुरझाने लगते हैं और जमीन पर गिरने के लक्षण दिखाई देने लगते है।

समेकित प्रबन्धनः

- प्रतिवर्ष नर्सरी के स्थान को बदलते रहना चाहिए।
- पौधशाला की क्यारी भूमि की सतह से थोड़ी ऊपर उठी हुयी एवं मृदा हल्की बलुई होनी चाहिए।
- बीज को घना नहीं बोना चाहिए।
- सिचाई हल्की एवं आवश्यकतानुसार करनी चाहिए।
- बुआई से पूर्व कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से या ट्राईकोडरमा 5–10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से शोधन करना चाहिए।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैंकोजेब की 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

2. फोमोप्सिस झुलसा एवं फोमोप्सिस फल सडन रोगः पौधों की पत्तियों के निचली सतह पर गोलाकार, हल्के भूरे धब्बे दिखाई पड़ते हैं, बीच का हिस्सा हल्के रंग का होता है। पुराने धब्बे के ऊपर छोटे–छोटे काले धब्बे दिखाई देते हैं। तने की गांठों के पास भुरी धँसी हुई सूखी सडन

Krishi Kumbh Online E-Magazine www.KrishiKumbh.Com

देखने को मिलती है। पुराने फलों के ऊपर हल्के भूरे धंसे हुए धब्बे बनते हैं प्रभावित फल सड़ने लगता है ।

समेकित प्रबन्धनः

- फफूंद प्रभावित सड़े–गले पौधों के अवशेषों में मिटटी में पलते बढ़ते हैं। वैसे मुख्यतः यह बीज जनित रोग होता है। नर्सरी में मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति ली पानी की दर से साप्ताहिक छिड़काव करें।
- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 या विनोमाईल से करें, या थिरम् कार्बेन्डाजिम (2:1) ग्राम प्रति किग्रा. से करें।
- 3–4 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं जिसमें टमाटर, मिर्च, बैगन आदि की फसल न लगायें।
- रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त सम्राट, फ्लोरिडा मार्केट, नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा क्रांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक आदि उगाये।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रथम छिड़काव कापर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 3 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से तथा दूसरा छिड़काव कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 1 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से करना चाहिए। या जिनेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 (डाईथेन जेड –78) या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 2.5 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करें ।

3. बैगन का छोटी पत्ती रोगः यह बैंगन का एक फाईटोप्लाजमा जनित विनाशकारी रोग है जिसे 'लीफ होपर' नामक कीट से फैलता हैं। इसमें रोगी पौधा बौना रह जाता हैं। तथा पत्तियां आकार में छोटी रह जाती हैं। प्रायः रोगी पौधों पर फूल नहीं बनते हैं। और पौधा झाड़ीनुमा हो जाता हैं। यदि इन पौधों पर फल भी लग जाते हैं तो वे अत्यंत कठोर होते हैं।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- रोगरोधी/सहनशील किस्में जैसे– पूसा पर्पिल क्लस्टर, पूसा पर्पल राउंड, पूसा पर्पल लांग, कटराइन सैल 212 – 1, सैल 252–1–1, सैल 252–2–1, पन्त ऋतुराज, बी.बी.–7, एच.–8, बी.डब्लू.आर.–12 उगाये। पेड़ी फसल ना लेवे।
- पौधों को रोपाई से पूर्व पौध उपचार आधे मिनट तक टेट्रासाइक्लिन के घोल में (1 ग्राम प्रति 10 ली पानी) या कार्बोसल्फान 25 प्रतिशत ई0 सी0 के 0.2 प्रतिशत के घोल में 20–25 मिनट तक उपचारित करके ही लगायें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें, टेट्रासाइक्लिन की आधी ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। इस रोग के प्रसार को रोकने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0 एल0 3 मिली0 प्रति 10 ली0 पानी या डाईमेंथोएट 30 ई0 सी0 1.5 मिली प्रति ली0 पानी या मैलाथियान 50 ई0 सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

4. बैगन का जीवाणु उकठा रोगः इसका प्रकोप पूरे पौधे पर एक साथ मुर्झान के रूप में दिखाई देता है। इस रोग का प्रकोप से पौधा सूखने से पहले ही निचली पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं। तना को काट कर देखने पर भूरे रंग का जमा हुआ पदार्थ दिखाई देता है, इसमें सफेद लसलसेदार छोटी–छोटी बूंद दिखाई देती है।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- बीज शोधन हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के 0.2 प्रतिशत के घोल में बीज को आधे घंटे तक

उपचारित कर बुआई करें। अथवा स्यूडोमोनास ल्यूरोसेंस पावडर की 10 ग्राम प्रति 100 बीज से शोधित करें।

- रोग ग्रसित भूमि में ब्लीचिंग पाउडर (विरंजक चूर्ण) 12 किग्रा. प्रति हे. उर्वरक के साथ प्रयोग करें।
- स्यूडोमोनास ल्यूरोसेंस पावडर की 50 ग्राम प्रति 1 किग्रा0 मिटटी में मिलाकर नर्सरी बेड में मिलाएं।
- 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं (आलू–गेहूं–सनई या गेहूं–हरीखाद–आलू उगायें) ।
- खेत को साफ–सुथरा रखें। रोग अवरोधी प्रजाति जैसे– अंजली (एफ1 हाइब्रिड), अमान्डा (एफ1 हाइब्रिड), एस.एम.–64, अर्का केशव, आदि लगायें ।
- जड़ उपचार स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 मिलीग्राम प्रति ली0 पानी में घोलकर आधे मिनट तक अथवा स्यूडोमोनास ल्यूरोसेंस या बैसिलस सबटीलिस पावडर की 25 ग्राम प्रति ली. पानी में घोलकर 20–30 मिनट तक उपचारित कर रोपाई करें।
- खेत में रोग के लक्षण दिखाई देने पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू पी की 3 ग्राम प्रति ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें ।

5. बैगन का पर्ण चित्ती रोग: पत्तियों पर अनियमित आकर के भूरे रंग के धब्बे प्रति चित्ती बनते हैं, इन चित्तियों के बीच में गोल छल्ले के आकर का चिन्ह होता है। कई धब्बे आपस में मिलकर बड़े धब्बों का आकर ले लेता है। दैहिक क्रिया प्रभावित होने से पत्तियाँ पीली हो जाती हैं जो सूखकर गिर जाती हैं। प्रभावित फल भी पीला होकर परिपक्व होने से पहले ही गिर जाता है।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं।
- बीज को स्वस्थ पौधों से प्राप्त करना चाहिए।
- बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम या विनोमाईल से करें , या थिरम् कार्बेन्डाजिम (2:1) ग्राम प्रति किग्रा. से करें।
- खेत को साफ–सुथरा रखें। रोग से बचाव हेतु स्टेकिंग (बांस की डंडियाँ लगायें) करें।
- रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त सम्राट, फ्लोरिडा मार्केट,नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा क्रांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक आदि उगाये।
- खेत में रोग के लक्षण दिखाई देने पर क्लोरोथैलोनिल 75 प्रतिशत डब्ल्यू पी या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू पी की 2.5 ग्राम प्रति ली पानी की दर से घोल बनाकर 2–3 छिड़काव करना चाहिए अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड की 3 ग्राम प्रति ली. पानी की दर से घोल बनाकर 2–3 छिड़काव करें।

6. बैगन का स्क्लेरोटीनिया अंगमारी रोग: यह रोग कवक द्वारा उत्पन्न होता हैं, संक्रमण वाले स्थान पर शुष्क धब्बा बनता हैं, जो धीरे – धीरे तने या शाखा को घेर लेता हैं, तथा ऊपर नीचे फैल कर संक्रमित भाग को सम्पूर्ण नष्ट कर देता हैं। तने के आधार पर संक्रमण होने पर आंशिक मुरझान दिखाई देती हैं। तने के पिथ में भूरे रंग से काले रंग के स्केलोरोष्यिा (काष्टकवक) बन जाते है। संक्रमित फल में भी मांसल ऊतक विगलित हो जाता है।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोगग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं। खेत में प्याज, चुकंदर, पालक, एवं मक्का उगायें।
- बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम या थिरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्य0ू पी0 (2:1) ग्राम प्रति किग्रा0

Krishi Kumbh Online E-Magazine www.KrishiKumbh.Com

से करें अथवा ट्राईकोडर्मा पावडर की 5–10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से करना चाहिए।

- खेत को साफ–सुथरा रखें। रोग से बचाव हेतु स्टेकिंग (बांस की डंडियाँ लगायें) करें।
- रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त सम्राट, फ्लोरिडा मार्केट, नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा क्रांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक आदि उगाये।
- खेत में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2.5 ग्राम प्रति ली0 पानी या कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 1 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 5–6 छिड़काव करना चाहिए ।

7. बैगन का श्याम व्रण रोग या फल विगलन:

यह रोग कवक द्वारा उत्पन्न होता हैं। इससे फल की हानि ज्यादा होती है। फलों पर चौड़े धब्बे प्रकट होते हैं, रोगी स्थान कुछ धँसा हुआ होता है, नम वातावरण में रोगी स्थान से भूरे रंग का तरल निकलता है जिसमें कवक के वीजाणु होते हैं। धब्बे आपस में मिलकर फल को सड़ा देते हैं। रोग का प्रकोप अधिक होने पर फल गिर जाते हैं।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोगग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं। टमाटर, मिर्च की फसल को न लगायें।
- बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम या थिरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 (2:1) ग्राम प्रति किग्रा0 से करें अथवा ट्राईकोडर्मा पावडर की 5–10 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज दर से करना चाहिए।
- जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- खेत को साफ–सुथरा रखें। रोग से बचाव हेतु स्टेकिंग (बांस की डंडियाँ लगायें) करें।
- रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त सम्राट, फ्लोरिडा मार्केट,नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा क्रांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक आदि उगाये।
- खेत में रोग के लक्षण दिखाई देने पर क्लोरोथैलोनिल 75 प्रतिशत डब्ल्यू पी या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू पी की 2.5 ग्राम प्रति ली पानी की दर से घोल बनाकर 2–3 छिड़काव करना चाहिए।

8. बैगन का मोजेक रोग:

यह रोग विषाणु द्वारा उत्पन्न होता हैं। पत्तियों पर हल्के भूरे, पीले रंग की छींट जैसी दिखाई देते हैं। रोग की तीव्रता के कारण पत्तियों के ऊतक सूख जाते हैं। पत्तियाँ टेढ़ी–मेढ़ी हो जाती हैं और पौधों की बढवार रूक जाती है। रोगी पौधों में फल कम लगते हैं।

समेकित प्रबन्धन:

- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- बैगन की फसल के पास टमाटर, तम्बाकू, मिर्च, दलहनी फसलें तथा कद्दूवर्गीय फसलें न लगायें।
- चूँकि इस कीट का प्रसार माहूँ के द्वारा होता है इसके नियत्रण हेतु डाईमेंथोएट 30 ई0 सी0 2 मिली० प्रति ली0 पानी की दर या मेटासिस्टाक्स 1 मिली० प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

9. बैगन का सूत्रकृमि:

रोगी पौधों की जड़ो में गाठें बन जाती हैं, रोगी पौधा बौना रह जाता हैं। पत्तियां हरी पीली होकर लटक जाती हैं। इस रोग के कारण पौधा नष्ट तो नहीं होता किन्तु गांठो के सडने पर सूख जाता हैं। इसके द्वारा 45–55 प्रतिशत तक हानि होती हैं।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोगग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें।
- 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं।

Krishi Kumbh Online E-Magazine www.KrishiKumbh.Com

- खेत मे नमी होने पर नीम की खली एवं लकड़ी का बुरादा 25 क्विंटल प्रति हेक्टयर की दर से भूमि में मिला देना चाहिए। रोगी पौधों को उखाड़ कर जला देना चाहिए। नेमागान 12 लीटर प्रति हैक्टयर की दर से भूमि का फसल बोने या रोपने से 3 सप्ताह पूर्व शोधन करना चाहिए अथवा कार्टप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी या कार्बोफ्यूरान 3 जी की 25 किग्रा0 प्रति हे0 खेत की अन्तिम जुताई के समय देना चाहिए।

(ख) बैगन की फसल के प्रमुख कीट एवं उनका समेकित प्रबंधन

1. बैगन का प्ररोह एवं फल बेधक कीटः यह बैगन का प्रमुख एवं धातक कीट है। वयस्क कीट एक प्रकार की तितली होती है जिसकी लम्बाई 10 मिमी. होती है। जिन पर चौड़े, भूरे धब्बे पाए जाते हैं। इसकी सूडी वाली अवस्था ही फसल को हानि पहुंचती है। सूडी चिकनी गुलाबी रंग की होती है, वयस्क सूडी की लम्बाई 15–18 मिमी. होती है। इसका प्रकोप आमतौर पर रोपाई के एक सप्ताह बाद शुरू हो जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीट अवरोधी प्रजाति जैसे– पूसा पर्पल राउंड, अर्का कुसुमाकर, डोली–5, पूसा पर्पल लॉन्ग, पन्त सम्राट, एस. एम. 67 एवं 68 आदि को लगाना चाहिए।
- प्रभावित तने व फलों को एकत्र कर (सप्ताहिक) नष्ट कर देना चाहिए।
- खेतों में टी के आकार की डंडियाँ लगायें।
- 10 मी0 के अंतराल पर फेरोमोन ट्रैप (100 प्रति हे.) लगाना चाहिए।
- जैविक कीटनाशी बी.टी. पावडर 1 किग्रा प्रति हे. 500 ली. पानी की दर से 2–3 छिड़काव कर नियंत्रण किया जा सकता है।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे– कार्बोसल्फान 25 प्रतिशत ई.सी. 2 मिली प्रति ली. पानी या कार्टप हाईडरोक्लोराइड 50 प्रतिशत एस.पी. 1 ग्राम प्रति ली. पानी या फ्लूबेन्दियामाइड 20 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 1 ग्राम प्रति 2 ली पानी या थायोडीकार्ब 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 1 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

2. बैगन का हड्डा भृंग कीटः वयस्क कीट पीलापन लिए भूरे या गहरे भूरे रंग का होता है जिनपर काले रंग की 7–14 बिंदियाँ पायी जाती हैं। ग्रब(शिशु) पीले रंग का, प्रौढ़ कीट 8–9 मिमी लम्बा, 5.5 मिमी चौड़ा होता है। मादा कीट समूह में पीले रंग के अंडे (सिगार के आकार) देती है। वयस्क एवं शिशु पत्तियों के हरे व मुलायम भाग को खुरचकर खा जाते हैं जिससे पत्तियों का ढांचा ही शेष रह जाता है जो बाद में सूखकर गिर जाता है। जीवन चक्र 20–50 दिन, 7 पीढ़ी प्रति वर्ष।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीटों के अंडे समूह, प्रौढ़ व शिशु को एकत्रकर नष्ट कर देना चाहिए।
- खेतों में टी के आकार की डंडियाँ लगायें।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- नीम तेल 1 ली0 60 ग्राम साबुन पावडर को आधा ली पानी में घोल लें, उसके बाद 20 ली0 पानी में घोले, 400 ग्राम लहसुन के पेस्ट को घोलें, उसके बाद छिड़काव करें।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी

जैसे– कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम प्रति ली. पानी या कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए अथवा मैलाथियान या कार्बरिल धूल की 20–25 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करना चाहिए।

3. बैगन का तना बेधक कीटः इस कीट का प्रकोप मार्च से अक्टूबर तक अधिक होता है। इस कीट की सूडी नवम्बर से मार्च तक पुराने पौधों के तने में छिपी रहती है। मार्च से अक्टूबर तक मादा कोमल पत्तियों, डंठलों एवं शाखाओं पर अंडे देती है। अण्डों से सूडी निकलकर तने में छेदकर प्रवेश कर जाती है और लम्बाई में सुरंग बनाकर पौधों की खाद्य आपूर्ति को बाधित करती है जिसके कारण पौधा पीला होकर धीरे–धीरे सूख जाता है। इसका जीवन चक्र 35–76 दिनों में पूरा हो जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीटों के अंडे समूह, प्रौढ़ व शिशु को एकत्रकर नष्ट कर देना चाहिए।
- प्रकाश प्रपंच दर 1 प्रति हे0 प्रयोग कर कीटों को नष्ट कर देना चाहिए।
- काट–छांट (रैटून क्रॉपिंग) वाली फसल लेने से बचें।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे– कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम प्रति ली0 पानी या कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए अथवा क्यूनलफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 ली0 नीम तेल 1 ली0 600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4. बैगन का हरा फुदका (जैसिड) कीटः इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ बैगन की प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों का रस चूस कर हानि पहुंचाते है। वयस्क कीट हरे रंग का 2 मिमी. लम्बा तथा पंख पर दो काले धब्बे पाए जाते हैं। शिशु सफेद रंग का होता है। ये कीट बैगन की निचली सतह से रस चूसते हैं साथ–साथ उसमें अपना जहरीला लार छोड़ते हैं जिससे प्रभावित भाग पीला होकर सूख जाता है। पत्तियाँ सूखकर गिरने जगती हैं जिससे पैदावार प्रभावित होती है।

समेकित प्रबन्धनः

- कीट अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे– वैशाली, मंजरी गोटा, मुक्ता केसी, राउंड ग्रीन, कल्यानिपुर टी–3 आदि को उगाना चाहिए ।बीज बोने से पहले बीज शोधन इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्ल्यू एस की 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से करना चाहिए।
- ट्रैप फसल के रूप में भिन्डी की फसल को बार्डर पर उगाना चाहिए।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे0 500–750 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- कीटनाशी रसायनों जैसे– इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 3 मिली0 प्रति10 ली0 पानी या इथोफेनप्राक्स 10 प्रतिशत ई0सी0 1.25 मिली0 प्रति ली0 पानी या बूफ्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0पी0 1 मिली0 प्रति ली0 पानी या लैम्डासाईहैलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 1 मिली0 प्रति 2 ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

Krishi Kumbh Online Magazine www.KrishiKumbh.Com